Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

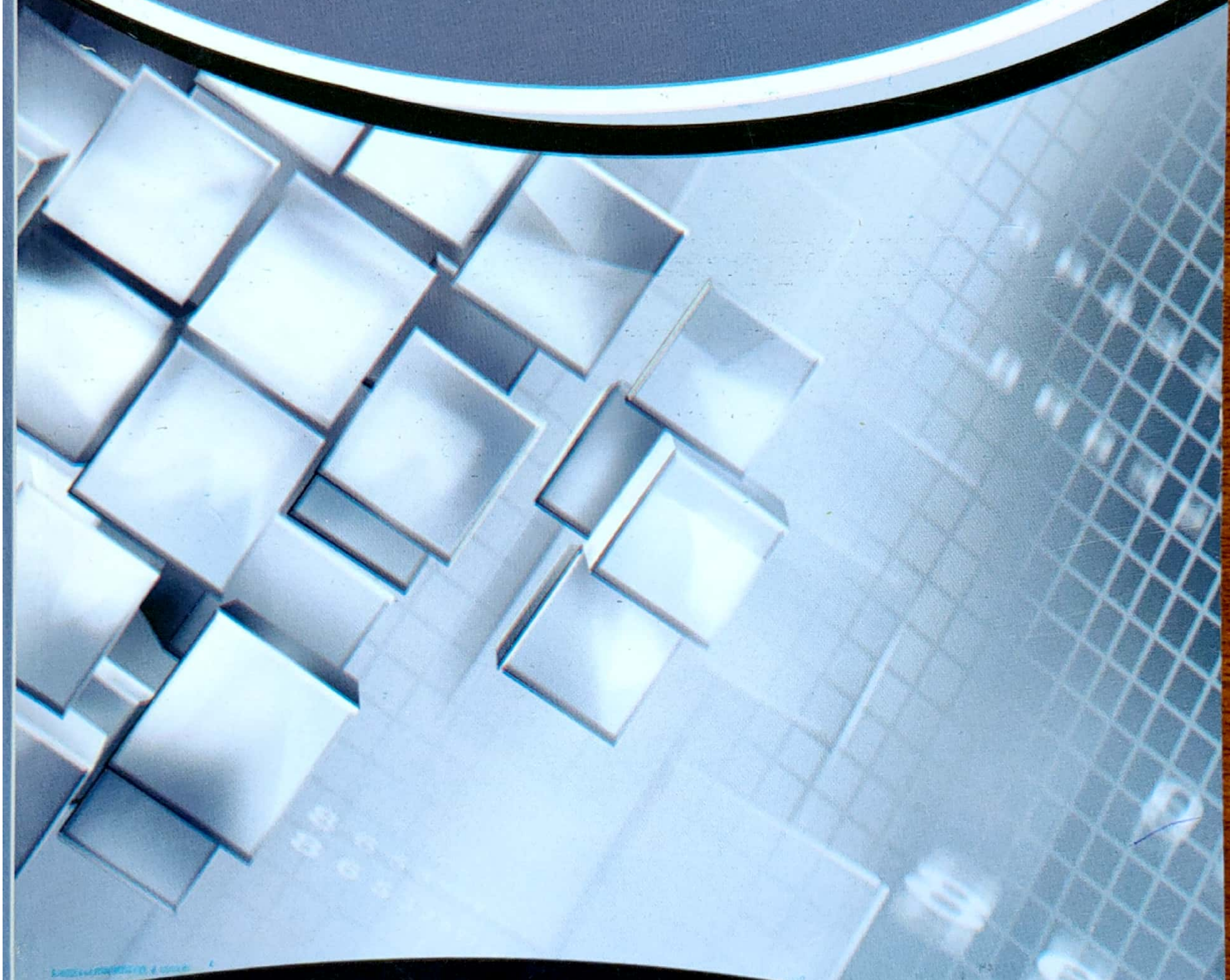

Editors
Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

Scanned with CamScanner

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

Scanned with CamScanner

Contents

Section-1 (A) : Jain Philosophy

1. प्राचीन जैन साहित्य में शरीर और चिकित्सा विज्ञान — 3-16
   प्रो. दामोदर शास्त्री
2. आगम व्याख्या-साहित्य में प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त — 17-27
   प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा
3. आचार्य महाप्रज्ञ-साहित्य में अध्यात्म-विकास की भूमिकाएं — 29-42
   प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा एवं डॉ. समणी श्रेयसप्रज्ञा
4. जैनदर्शन में समुद्घात की अवधारणा — 43-57
   समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा
5. **Number Theory: A Mathematical Solution of Metaphysical Problems in Jaina *Āgama*** — 59-72
   Dr Samani Vinay Pragya
6. **Communication and our Relations** — 73-84
   Dr Samani Aagam Pragya
7. जैन परंपरा में मान्य सूर्य एवं चन्द्रमाँ का स्वरूप — 85-95
   डॉ. योगेश कुमार जैन
8. पर्यावरण संरक्षण और जैन धर्म — 97-103
   डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
9. पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन — 105-119
   डॉ. समणी हिमप्रज्ञा
10. सामायिक आवश्यक : एक अनुशीलन — 121-141
    डॉ. मुमुक्षु वन्दना मेहता

Section-1 (B) : Experimental Researches on Preksha Meditation

11. **Role of Preksha Meditation in Improvement of Blood Count and Biochemistry of Adults** — 145-154
    Dr Pradyumna Singh Shekhawat

Scanned with CamScanner

12. Effect of Preksha Meditation on Cognitive Distortion 155-174
Dr Samani Sulabh Pragya
13. प्रेक्षाध्यान का महाविद्यालयी छात्राओं की सृजनात्मक क्षमताओं पर प्रभाव का अध्ययन 175-183
डॉ. अशोक भास्कर

Section-2 (A) : Indian Culture

14. बीकानेर संभाग में प्राप्त संस्कृत अभिलेखों का सांस्कृतिक तत्व 187-194
डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा
15. अहिंसक जीवनशैली: सामाजिक समरसता का आधार गांधीयन परिप्रेक्ष्य 195-207
डॉ. जुगलकिशोर दाधीच
16. वैदिक संस्कृति में तप की महत्ता एवं उपादेयता 209-221
डॉ. सुनिता इंदोरिया
17. कालिदास के साहित्य में सामाजिक समरसता 223-229
डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज
18. आचार्य महाप्रज्ञ का शिक्षा दर्शन 231-244
डॉ. हेमलता जोशी

Section-2 (B) Miscellaneous

19. Choice Based Credit System: A new paradigm Shift in Indian University Platform 247-260
Dr Bhabagrahi Pradhan
20. Various Types of Cooperation in Rural Communities of Ladnun, Rajasthan: A study 261-278
Dr Bijendr Pradhan
21. Diasporic Conditions and the Aporia of Female Sensibility in Jhumpa Lahiri's The Namesake. 279-285
Dr Govind Sarswat

Scanned with CamScanner

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन

*****

***डॉ. समणी हिमप्रज्ञा**

सारांशिका

आज विश्व में अनेक समस्याएं है, उनमें से पर्यावरण प्रदूषण एक ज्वलन्त समस्या बनी हुई है। इस समस्या पर विश्वस्तरीय विचार–विमर्श भी हो रहा है, अनेक उपाय व समाधान खोजे जा रहे है। जैन दर्शन में भी इसके समाधानार्थ खोज सम्भव है। इस आलेख के माध्यम से विविध पर्यावरणीय प्रदूषण के लिए जैन दर्शन के कौन से सिद्धान्त व प्रयोग या उपाय कारगर हो सकते है, उसका विश्लेषण किया गया है।

जैन दर्शन में सैद्धान्तिक पक्ष बहुत सशक्त रहा है। वही प्रायोगिक पक्ष भी बहुत प्रबल रहा है। क्योंकि यहां सम्यक्ज्ञान व उसका आचारण दोनों पर समान बल रहा है। अतः जैन दर्शन के संयम, त्याग, व्रत, इत्यादि प्रयोगों को जीवन में उतार कर जनयोग्य बनाया जाए तो, पर्यावरणीय सम्बन्धित अनेक समस्याओं से निजात पाया जा सकता है। इसकी कुछ चर्चा इस आलेख में प्रस्तुत की गई है।

सम्बद्ध शब्द : *पर्यावरण प्रदूषण, जैन दर्शन, व्रत, संयम।*

***सह-आचार्य,** जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग,
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं 341306 (राजस्थान)

भूमिका

सृष्टि का जीवन सापेक्ष है। इसमें जड़ और चेतन जितने पदार्थ हैं, वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। सृष्टि के किसी कोने में कुछ भी घटित होता है, उसका प्रभाव सब पर होता है। इकोलोजी का भी यही सिद्धान्त है कि संसार के सारी प्रकृति तालबद्ध तरीके से चल रही है। कुछ लोग मानते हैं कि इस गतिमयता के पीछे ईश्वर का हाथ है। पर जैन दर्शन ऐसी किसी ईश्वर शक्ति में विश्वास नहीं करता। उसके अनुसार तो सब प्राकृतिक सब पदार्थ एक दूसरे पर आश्रित है। एक का परिवर्तन दूसरे में भी परिवर्तन लाता है।

धरती, हवा, पानी और वनस्पति सृष्टि संतुलन के आधारभूत तत्त्व है। ये जेसे हैं, वैसे ही बने रहे तो सृष्टि का संतुलन बना रहता है। इनमें गड़बड़ी होने से संतुलन बिगड़ने का खतरा बढ़ता है। दुनिया में अपना एक निश्चित संतुलन है। नियमों के अनुसार ही होता है। मनुष्य प्राकृतिक व्यवस्था का उल्लंघन कर वैज्ञानिक प्रगति के नाम पर कुछ ऐसा प्रयत्न कर रहा है जिससे सहज संतुलन के बिगड़ने का खतरा पैदा हो रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण मिथ्यादृष्टिकोण

कुछ लोगों की मान्यता है कि सब पदार्थ मनुष्य के उपभोग के लिए बने हैं। इस मिथ्यादृष्टिकोण से पर्यावरण का प्रदूषण हो रहा है। अनेक वैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता आदि का कथन है कि पर्यावरण प्रदूषण का यही क्रम रहा तो धरती रहने लायक नहीं रहेगी। पर्यावरण आज का सबसे अधिक ज्वलन्त मुद्दा है, क्योंकि इसके भयंकर प्रदूषण ने न केवल किसी एक देश विशेष को हानि पहुंचाई है, अपितु समस्त जीव जातियां इस भयंकर खतरे की चपेट में हैं। एक जीव विज्ञानी ने अपने वक्तव्य में कहा–आज का मनुष्य हजारों–लाखों पशु–पक्षियों को नष्ट कर रहा है। "काफी अनुसंधान के बाद उसने यह निष्कर्ष निकाला" एक हजार प्रजातियां नष्ट हो गई हैं और अनेक प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। पर्यावरण प्रदूषण के कारण आज प्रकृति का सारा ही संतुलन गड़बड़ा गया है।

पर्यावरण प्रदूषण के विविध रूप

पर्यावरण विज्ञान का एक पहलू है–पर्यावरण का संतुलन। उसका दूसरा पहलू है–पर्यावरण का प्रदूषण। भूमि, जल, वायु सब प्रदूषित होते जा रहे हैं। भारत में भी विश्व के अन्य देशों की भांति प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण की मात्रा प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। छोटे से छोटे खाद्य पदार्थ हो या पान मसाले के गुटके हो सभी वस्तुएं प्लास्टिक में पैकिंग होती है। पॉलीथिन और प्लास्टिक गांव से लेकर शहर तक सबकी सेहत बिगाड़ रहे हैं। प्लास्टिक के

गिलासों में चाय या फिर गर्मदूध का सेवन करने से उसका केमिकल लोगों के पेट में जाता है। इससे डायरिया के साथ अन्य गंभीर बीमारियां होती है। प्लास्टिक और पॉलीथिन का प्रयोग पर्यावरण और मानव सेहत दोनों के लिए खतरनाक है।

प्लास्टिक कचरा वैश्विक स्तर पर पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है। कुछ महीनों पहले कुछ आंकडे आएं जिसमें स्पष्ट किया गया कि हर साल पूरी दुनिया में उत्पादित होने वाला लगभग तीस करोड़ टन प्लास्टिक दोबारा उपयोग में नहीं लाया जाता है जिसका दीर्घकालिक प्रभाव कहीं न कहीं पृथ्वी के चारों महासागरों पर पड़ रहा है। एक अन्य शोध निष्कर्ष से पता चला है कि समुद्री मछलियों के पेट में बड़ी मात्रा में प्लास्टिक मिलने लगा है। इस तरह मछलियों में प्लास्टिक का मिलना न केवल मत्सय प्रजातियों के लिए घातक है, बल्कि समुद्री खाद्य पर निर्भर मनुष्यों व अन्य जीवों का जीवन खतरे में पड़ सकता है।[1]

इलेक्ट्रोनिक प्रदूषण

वर्तमान समय में मोबाइल, कम्प्यूटर, लैपटोप, टैबलेट आदि हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं, नित नई तकनीक के साथ अपने आपको जोड़े रखने के जुनून में हम भूल जाते हैं कि पुराने कम्प्यूटर का क्या होगा, पुरानी सीडी एवं दूसरे ई–वेस्ट को कूड़ेदान में डालते वक्त कभी ध्यान ही नहीं देते कि यह कबाड़ हमारे लिए कितना खतरनाक हो सकता है। बढ़ते शहरीकरण के कारण इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का ज्यादा प्रयोग होने लगा है, मगर इससे पैदा होने वाले ई–कचरे के दुष्परिणाम से लोग अनजान है। ई–कचरे के अन्तर्गत सभी इलेक्ट्रोनिक उपरकण आते हैं।

पिछले साल दुनिया में सबसे ज्यादा 1.6 करोड़ टन ई–कचरा एशिया में पैदा हुआ, इनमें चीन में 60 लाख टन, जापान में 22 लाख टन और भारत में 17 लाख टन ई–कचरा पैदा हुआ। पिछले साल पैदा हुए ई–कचरे में सात फीसदी मोबाइल फोन, प्रिंटर, केलकुलेटर और छोटी आईटी उपकरण रहे। भारत के नियंत्रक एवं महालेख परीक्षा द्वारा दिए गए आंकड़ों के अनुसार भारत में प्रतिवर्ष लगभग 4 लाख टन ई–कचरा पैदा होता है। घरेलू ई–कचरे जैसे– अनुपयोगी टी.वी. और रेफ्रिजरेटर आदि उनमें लगभग एक हजार विषैले पदार्थ होते हैं जो मिट्टी एवं भू–जल को प्रदूषित करते हैं। इन पदार्थों के संपर्क में आने पर सरदर्द, उल्टी, आंखों में दर्द जैसी समस्याएं हो सकती है।[2]

इसके अतिरिक्त पर्यावरण प्रदूषण के निम्नांकित कारण इस प्रकार हैं–

- प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक दोहन।

- सुविधावादी जीवनशैली और बढ़ता हुआ असंयम।
- पृथ्वी का अधिक मात्रा में उत्खनन।
- पानी का अत्याधिक अपव्यय, कीट नाशक दवाएं।
- धूम्रपान।
- खेतों में रासायनिक खाद का असंतुलित उपयोग।
- वनों की अंधाधुंध कटाई।
- ध्वनि प्रदूषण।
- निरंतर बढ़ती आबादी।
- औद्योगीकरण।
- वाहनों द्वारा छोड़ा जाने वाला धुंआ।
- नदियों, तालाबों में गिरता हुआ कूड़ा कचरा।

भूमिप्रदूषण

पत्थर के कोयले आदि के लिए पृथ्वी का दोहन अत्यधिक किया जा रहा है। भूवैज्ञानिकों की आशंका है कि यदि खनिज पदार्थों का उपयोग इसी प्रकार होता रहेगा तो कुछ ही वर्षों में भंडार खाली हो सकते हैं। कुछ स्थानों पर पहाड़ों के उत्खनन से पानी का प्रवाह विपर्यस्त हो जाता है जिससे बहुत सारी कीमती जमीन को नदियां लील जाती हैं। उससे जो प्राकृतिक विनाश होता है उसका अंकन करना कठिन है। पत्थर के कोयलों के जलने से भी प्रदूषण बढ़ता है। एक व्यक्ति एक वर्ष में जितना ऑक्सीजन का उपयोग करता है उतना ऑक्सीजन एक टन कोयले के जलने से खत्म होता है। औद्योगिक इकाइयों में कोयले का जलाया जाना चलता रहा तो कुछ वर्षों बाद तेजाबी बारीश हो सकती है, ऐसी संभावना की जा रही है। पृथ्वी के अत्यधिक उत्खनन की समस्याएं स्पष्ट हैं। पर्यावरण की दृष्टि से पृथ्वी के ऊपर की मिट्टी की परत बहुत मूल्यवान है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि 1 सेन्टीमीटर मोटी परत के बनने में लगभग 300 से 1000 वर्ष तक का समय लग जाता है।[3] एक–एक कण के जमने से इस परत का निर्माण होता है। मनुष्य के एक ही झटके से यह परत इतनी क्षतिग्रस्त हो जाती है जिसकी पूर्ति लाखों वर्षों बाद ही संभव हो सकती है।

भगवान् महावीर ने कहा–मेधावी पुरुष हिंसा के परिणाम को जानकर पृथ्वी शस्त्र का समारंभ न करें, दूसरों से उसका समारंभ न करवाये, उसका समारंभ करने वालों का अनुमोदन न करें।[4] नाना प्रकार के शस्त्रों से पृथ्वी संबंधी क्रिया में व्याप्त होकर पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करने वाला व्यक्ति अनेक प्रकार के अन्य जीवों की हिंसा करता है।[5] इससे सिद्ध होता है कि महावीर ने पृथ्वीकाय की हिंसा का निषेध किया है। जैन विज्ञान के अनुसार पृथ्वी में रहने वाले कीटाणु पृथ्वीकाय नहीं हैं। पृथ्वीकाय स्वयं जीवाणुओं का

पिंड है। विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि एक ढेले में कई लाख दर्जन अति सूक्ष्म जीवाणु हैं, जो लाखों वर्ष से धरती को उपजाऊ बनाए हुए हैं।

भूमि की उर्वरता बढ़ाने हेतु रासायनिक खाद का तथा फसल को कीड़ों और रोगों से बचाने के लिए कीटनाशक दवाओं का उपयोग किया जाता है जो भूमि को प्रदूषित कर देते हैं। इनके कारण भूमि को लाभ पहुंचाने वाले मेंढक एवं केंचुआ जैसे जीव नष्ट हो जाते हैं।[6]

जल प्रदूषण

पृथ्वी का तीन तिहाई भाग जल मग्न है। फिर भी करीब 0.3 फीसदी जल पीने योग्य है। विभिन्न उद्योगों और मानव बस्तियों के कचरे ने जल को इतना प्रदूषित कर दिया है कि पीने के करीब 0.3 फीसदी जल में से मात्र करीब 30 फीसदी जल ही वास्तव में पीने के लायक रह गया है।

आजादी के बाद तीव्र औद्योगीकरण तथा गहन कृषि के परिणामस्वरूप जल प्रदूषण की समस्या वृहद् स्तर के रूप में सामने आई है। भारत की हुगली नदी संसार की सबसे प्रदूषित जल स्रोतों में से एक मानी जाती हैं। गंगा नदी जिसे हिन्दुओं की पतित पावनी कहा जता है अत्यधिक प्रदूषित हो चुकी है। यमुना, गोमती, चम्बल तथा झेलम नदी भी प्रदूषित हो चुकी है। प्रूदषित जल का सेवन करने से निम्नलिखित रोग पैदा होते हैं जैसे त्वचा रोग, पीलिया, टायफाइड, बुखार, कैंसर, जोड़ों के दर्द, गुर्दा तथा हृदय रोग आदि।[7]

जल के बिना जीवन संभव नहीं है। जल जीवन के लिए आवश्यक है। जल पोषक तत्त्व होने के साथ –साथ शरीर के अन्य पोषक तत्त्वों के वहन का कार्य भी सम्पादित करता है। शुद्ध जल शरीर के लिए अत्यंत जरूरी है। शुद्ध जल के अभाव में अनेक बीमारियां पनपने की संभावना रहती है। वर्तमान समय में पीने के लिए शुद्ध जल भी दुर्लभ है क्योंकि चारों ओर प्रदूषण के कारण वातावरण विषाक्त होता जा रहा है। जल का संबंध अन्य क्रियाओं से भी जुड़ा है। भोजन पकाने में, सफाई करने में, विभिन्न उद्योग–धन्धों में, सिंचाई में, वाष्प से चलित ईंजन में, बिजली पैदा करने के लिए विद्युत यंत्रों आदि में जल की अपेक्षा रहती है। इससे स्पष्ट है कि जल जीवन की आधारभूत आवश्यकता है।

आज से 40–50 वर्ष पहले मनुष्य जल का दुरुपयोग नहीं करता था। उसकी आवश्यकताएं भी सीमित थी। उसकी प्रत्येक क्रिया में संयम था। वर्तमान समय में मनुष्य संयम की बात भूल गया है, इसीलिए स्नान करने में कपड़े धोने में, घर की सफाई करने में अनाप–सनाप पानी का अपव्यय

करता है। परिणामस्वरूप अनेक व्यक्तियों को पीने के लिए पानी नहीं मिल रहा है। जैन दर्शन के अनुसार पानी की एक बूंद में असंख्य जीव होते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक कैप्टिन स्कबेसिवी ने यन्त्र के द्वारा एक लघुजलकण में 36450 जीव गिनाये हैं।[8]

जल प्रदूषण से अप्काय की हिंसा तो होती ही है पर वनस्पति, द्वीन्द्रिय प्राणी, मछलियों, यहां तक कि उसका प्रदूषण मनुष्य को भी प्रभावित करता है। पानी में मनुष्य का मल फेंकने से भी उसमें भयंकर प्रदूषण पैदा होता है। 'सेन्ट्रल बोर्ड फॉर प्रिवेंशन एण्ड कंट्रोल ऑफ वाटर सोल्युशन' के अध्यक्ष का मन्तव्य है कि प्रतिदिन दिल्ली की यमुना नदी में दस करोड़ लीटर मल निर्यात होता है, जबकि उसमें दो करोड़ लीटर कचरा भी उद्योगों द्वारा छोड़ा जाता है। सर्वेक्षणों से ज्ञात हुआ है कि प्रतिवर्ष जल प्रदूषणों से लगभग दो लाख व्यक्ति मर रहे हैं। इंग्लैण्ड में प्रतिदिन एक हजार मिलियन लीटर कचरा टेम्स नदी में फेंका जाता है। जर्मनी की राईन नदी में करोड़ों मछलियां प्रदूषित कचरे के कारण मर गई। आयरलेण्ड के समुद्र में हजारों समुद्रपक्षी कीटनाशक पदार्थों के कारण मर गये थे।[9] इसलिए भगवान् महावीर ने कहा है–तं से अहियाए तं से अबोहीये–जल की यह हिंसा मनुष्य के अहित तथा अबोधि का कारण है। जल प्रदूषण से पौधों व जन्तुओं की मृत्यु हो जाती है। खनिज तेल के रिसाव से जलीय जीवों को बड़ी संख्या में हानि होती है। ऐसे जल से सिंचाई करने पर फसलें नष्ट हो जाती है। रसायनों के कारण भूमि की उत्पादकता में कमी आती है।[10] आचारांग निर्युक्ति में जलकायिक जीवों के सात प्रकार के शस्त्रघात बतलाये गये हैं–

1. उत्सेचन–अर्थात् कुएं आदि जलाशयों से जल निकालना और मूल स्रोत से उसे पृथक् करना।
2. गालन–मोटे कपड़े से जल छानना।
3. धावन–वस्त्र, पात्र आदि धोना और उसके मूल–स्वरूप को खराब कर इधर–उधर फेंकना।
4. परकायशस्त्र–तेल, मिट्टी, क्षार आदि का जल से मिश्रण कर उसके मूल स्वरूप को विकृत करना।
5. स्वकायशस्त्र–नदी का पानी तालाब के पानी का शस्त्र।
6. तदुभयशस्त्र–जल मिश्रित मिट्टी जल का शस्त्र।
7. भावशस्त्र–असंयम द्वारा जल का दुरुपयोग करना।[11]

वायु-प्रदूषण

वैश्विक स्तर पर वायु प्रदूषण जान लेवा सिद्ध हो रहा है। इसी वजह से दिल और सांस संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ने से मृत्युदर पर असर पड़ रहा है। बढ़ते वायु प्रदूषण से देश के शहर एक बड़े गैस चेम्बर के रूप में नजर आ रहे हैं, जिससे लोग काल के मुख में समा रहे हैं। प्रदूषण से आम जनता की सेहत पर पड़ने वाले प्रभावों और होने वाली मौतों की भयावहता की तस्वीर सामने आई है। इस रिपोर्ट को हेल्थ अफेक्ट इंस्टीट्यूट और यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन स्थित इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एण्ड इवेल्यूशन ने संयुक्त तौर पर तैयार किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों पर आधारित इस रिपोर्ट में 195 देशों के 1990 से 2015 तक के विस्तृत आकड़ें हैं। इनके आधार पर मौतों की संख्या को निकाला जाता है। रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2015 में पूरी दुनिया में 42 लाख लोगों की मौत वायुप्रदूषण की वजह से हुई हे। इनमें से बावन फीसदी मौतें भारत और चीन में हुई। भारत में प्रतिवर्ष करीब दस लाख लोगों की मौत वायु प्रदूषण से होती है। उल्लेखनीय है कि नाइट्रोजन, सल्फर, ऑक्साइड, कार्बन तथा खासकर पीएम 2.5 जैसे वायु प्रदूषण तत्त्वों को विश्व में मौत का कारण माना जाता है।[12]

वायु का प्रदूषण आज के युग की एक ज्वलन्त समस्या है। सर्वेक्षण द्वारा ज्ञात हुआ है कि पिछले वर्षों में वायुमण्डल में कार्बन–डाई– ऑक्साइड की मात्रा 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। कार्बन–डाई–ऑक्साइड की मात्रा वातावरण में निरन्तर बढ़ती रही तो मनुष्य एवं जानवरों के शरीर हेतु आवश्यक प्राणवायु का अनुपात घट जायेगा। घटते अनुपात के कारण महानगरीय इलाकों में लोगों के श्वास रोग और नेत्र रक्तिमता बढ़ रही है। वायुमण्डल में सन् 1870 की अपेक्षा ग्यारह प्रतिशत कार्बनडाई–ऑक्साइड अधिक है। नैसर्गिक शुद्ध हवा का प्रदूषण मुख्यतः ईंधन के जलने तथा विविध औद्योगिक प्रक्रियाओं से हवा में छोड़े जाने वाले पदार्थों के कारण होता है। कारखानों, मोटरकार आदि के धुंओं में कार्बनडाईऑक्साइड ही नहीं, धातुओं के कण, कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड आदि हानिकारक तत्त्व होते हैं। धातु कणों में सीसा, पारा तांबा आदि धातु होते हैं।[13]

पश्चिमी जर्मनी में हुए अनुसंधान के अनुसार मोटरकारों द्वारा छोड़े गए धुएं में एवं आस–पास के वातावरण में पाये जाने वाले सीसे की मात्रा में सीधा संबंध है। एक अनुमान के अनुसार कारें लगभग 5 लाख टन सीसा प्रतिवर्ष वायुमंडल में छोड़ती हैं। सीसे के जहर से मानव मस्तिष्क तन्तु नष्ट हो जाते हैं। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार दमा, कफवृद्धि आदि फेफड़ों की बीमारियों की वायु–प्रदूषण से वृद्धि होती है। अमेरिकन पब्लिक हेल्थ ऐसोसिएशन के अध्ययन

के अनुसार ऐसे वातावरण में पांच लाख बच्चों को दमा का असर दुगुना दिखाई दिया तथा त्वचा रोग का प्रमाण चार गुना ज्यादा दिखाई दिया है।[14]

वायु प्रदूषण का प्रभाव केवल मनुष्य को ही नहीं, सभी जीव जंतुओं को प्रभावित करता है। शलभ, मधुमक्खी आदि अनेक प्रकार के कीट इस वायु प्रदूषण से भारी संख्या में काल के ग्रास बनते जा रहे हैं। वनस्पति जगत् भी इसके दुष्प्रभाव से बच नहीं पाया है। प्रकृति का हर कण एक दूसरे से जुड़ा हुआ है, इसलिए एक का दुष्प्रभाव सम्पूर्ण सृष्टि को प्रभावित करता है।[15]

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण भी आज के युग की बहुत बड़ी समस्या है। यातायात की गड़गड़ाहट, मशीनों की खड़खड़ाहट, विमानों की तेज आवाज, पंखे रेड़ियों और अन्य यन्त्रों का कोलाहल। इस बढ़ती हुई अनियन्त्रित ध्वनि पर नियन्त्रण की आवश्यकता है, क्योंकि उच्च स्वर में तरंगित होने वाली तरंगें मानव के लिए मौत का कारण बन रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार एक व्यक्ति की सुनने की क्षमता 30 से 90 डेसिबल होती है। जब इनसे अधिक डेसिबल वाली ध्वनि कान के पर्दे से टकराती है जिससे पर्दे के प्रतिरोधात्मक प्रक्रिया स्वरूप काफी शक्ति खर्च करनी पड़ती है। यदि बार–बार ऐसा होता है तो पर्दे की क्षमता कम हो जाती है या समाप्त। जेट विमान का ध्वनि प्रमाण 130 से 150 डेसिबल है। अन्य हवाई जहाजों का ध्वनि प्रदूषण 120 से 130 डेसिबल है। गाड़ी के होर्न का ध्वनि प्रमाण 110 डेसिबल है। विश्व का सबसे बड़ा हवाई अड्डा लंदन में है। जिसका नाम है "हीथ्रो"। वहां पर सबसे अधिक हवाई जहाज उतरते हैं, फलस्वरूप उस क्षेत्र के आस–पास रहने वाले लोगों में पागलपन, बहरापन, पक्षाघात जैसे रोगों की वृद्धि हो रही है। डॉ. हेटिस के अनुसार उच्च ध्वनि से आर. बी. सी. आपस में टकराते हैं और एक दूसरे से चिपक जाते हैं, जिसका स्थाई इलाज भी नहीं है। ध्वनि प्रदूषण के कारण ज्ञान तन्तु भी निष्क्रिय हो जाते हैं। पर्यावरण विशेषज्ञों का कथन है कि ध्वनि प्रदूषण की समस्या इसी प्रकार बढ़ती रही तो पागलों की संख्या का परिमाण बढ़ सकता है।[16] भगवान् महावीर समाधान के लिए कहते हैं वाणी का संयम करो, बहुत मत बोलो।

वनस्पति प्रदूषण

प्राणी जगत् की अनिवार्य अपेक्षा है–हवा, पानी और भोजन। मनुष्य पेड़–पौधों से ऑक्सीजन ग्रहण करता है। वृक्ष ऑक्सीजन छोड़ना बंद कर दे तो सम्पूर्ण प्राणी जगत् का जीवन संकट में पड़ सकता है। वृक्षों का अस्तित्व भी छोटे–छोटे कीड़ों पर टिका हुआ है जो उनके लिए खाद्य तैयार करते हैं।

चींटी, दीमक आदि छोटे—छोटे कीड़ों जड़ें तक हवा, नमी और रोशनी पहुंचाने में योगभूत बनते हैं। इसलिए किसी का भी अस्तित्व स्वतंत्र नहीं है। एक के अस्तित्व को क्षति पहुंचाने का अर्थ है अनेक के जीवन को खतरे में डालना।

आज वनस्पति का विनाश भी अत्यधिक मात्रा में हो रहा है। आदमी जंगल काट रहा है। जंगलों के काटने से वर्षा का संतुलन बिगड़ रहा है। कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि। जंगलों की सघनता कम होने से देश की करोड़ों टन उपजाऊ मिट्टी नदियों के साथ बहकर समुद्र में चली जाती है। आणविक विकिरणों के सोखने का उपाय वनस्पति है, वह खत्म हो रही है। कागज के बड़े—बड़े कारखानें लग रहे हैं और उनके लिए जंगलों का काटना भी जरूरी हो गया है, यह जरूरत पर्यावरण के प्रदूषण का कारण बन रही है। कुछ वर्षों पहले जोधपुर विश्वविद्यालय में वानस्पतिक प्रदूषण के संबंध में आयोजित एक गोष्ठी में बोलते हुए प्रो. जी. एम. जौहरी ने कहा था—पेड़ पौधों से ही पृथ्वी पर जीवन है। वनस्पति के बिना जैविक प्रक्रिया असंभव है। जैविक संतुलन बनाए रखने के लिए पौधों का संरक्षण आवश्यक है। वनस्पति मनुष्य के लिए अनेक दृष्टियों से वरदान है। संसार में जितना प्राण वायु में है, उसका बहुत बड़ा भाग वनस्पति से ही उत्पन्न होता है। चूंकि मानव जीवन वनस्पति पर आधारित है, वही मनुष्य की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। प्राणवायु की दृष्टि से भी पौधों को संरक्षण दिये जाने की आवश्यकता है। ईसा पूर्व की शताब्दियों में अनेक प्रकार के फल उपलब्ध होने के संकेत आज भी मिलते हैं। लेकिन संरक्षण के अभाव में लुप्त हो गये। आज वनस्पति सम्पदा का जिस प्रकार से विनाश हो रहा है, वह चिन्ता का विषय है। पेड़—पौधों की लगभग 500 जातियां नष्ट हो गई।[17] अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी गरुड़ है। उसकी संख्या क्रमशः घटती जा रही है। कारण की खोज करने से ज्ञात हुआ कि पौधों की कीड़ों से रक्षा करने के लिए डी.डी.टी. आदि रासायनिक द्रव्यों का प्रयोग किया गया, जिससे पौधों की स्वाभाविकता नष्ट हो गई। गरुड़ पक्षी को प्राकृतिक भोजन न मिलने के कारण प्रजनन की क्षमता समाप्त हो गई।[18]

लेबनान के पर्वतों के बारे में यह बताया गया कि ये पर्वत आज से 5000 वर्ष पूर्व देवदार, चीड़, बांज और जूनिफर के जंगलों से ढके थे, किन्तु आज ये पर्वत सहारा रेगिस्तान की तरह अन—उपजाऊ विरान पड़े हैं। इनका विनाश भी एक लम्बी कहानी से जुड़ा हुआ है। मिस्र के निवासियों ने इन जंगलों को इमारतों और जहाजों के निर्माण के लिए पूर्णतया धराशायी कर दिया। बचे हुए जंगलों को ब्रिटिश सैनिकों ने द्वितीय विश्व युद्ध के समय रेल लाइनें बिछाने के लिए नष्ट कर दिया। धरातल से हरे आवरण के नष्ट हो जाने से मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियों में ह्रास हो रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न समस्याएं

पर्यावरण प्रदूषण केवल समस्या नहीं है, अपितु अनेकानेक समस्याओं का जनक है, मूल है। इसके कारण विश्व में अनेक समस्याएं उत्पन्न हुई हैं, जैसे–ग्लोबल–वार्मिंग, ओजोन परत में छिद्र, वातावरण में बदलाव, स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याएं, स्वच्छ जल, अन्न तथा वायु से सम्बन्धित समस्याएं आदि। पर्यावरण प्रदूषण के द्वारा स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याएं बढ़ती जा रही है। अनेक नई–नई बीमारियां जन्म ले रही है। आज पूर्ण रूप से बहुत कम व्यक्ति स्वस्थ नजर आ रहे हैं।

अन्न, जल, वायु आदि भी दूषित हो रहे हैं। शुद्ध अन्न, जल, फल, सब्जी आदि की प्राप्ति असंभव हो गई है। सभी शरीर को पोषण देने की बजाय शोषण का कार्य कर रहे हैं। पानी की भी विकराल समस्या सबके सामने हैं–यह बताने की आवश्यकता नहीं हैं। इस विषय में विशेषज्ञों का कहना है कि तीसरा विश्वयुद्ध जल संकट के कारण होगा। सांस लेने के लिए शुद्ध ऑक्सीजन नहीं मिल रही है। कुछ महीनों पूर्व बढ़ते हुए प्रदूषण को देखते हुए नवभारत टाइम्स (हिन्दी दैनिक, नई दिल्ली) में समाचार छपा था कि दिल्ली गैस चेम्बर बन गई है।

विलुप्त होती जाती प्रजातियां

धरती का तापमन निरंतर बढ़ रहा है इसलिए पशु–पक्षियों की कई प्रजातियां लुप्त हो रही हैं। जंगलों से शेर, चीते, बाघ आदि गायब हो चले हैं। भारत में 50 करोड़ से अधिक जानवर है, जिनमें से पांच करोड़ से अधिक मर जाते हैं और साढ़े छः करोड़ नये जन्म लेते हैं। वन्य प्राणी प्राकृतिक संतुलन स्थापित करने के लिए सहायक होते हैं। उनकी घटती संख्या पर्यावरण कि लिए घातक है, जैसे गिद्ध जानवर की प्रजाति वन्य जीवन के लिए वरदान है पर 90 प्रतिशत गिद्ध मर चुके हैं। पर्यावरण की दृष्टि से वन्य प्राणियों की रक्षा अनिवार्य है।[19]

वैज्ञानिकों का कथन है कि प्रकृति पूर्ण रूप से साफ–सुथरी है। इसमें किसी प्रकार की गन्दगी नहीं है। प्रकृति में सब जीव–जन्तु, प्राणी तथा वनस्पति जगत् मिलजुल कर रहते हैं, किन्तु मानव के हस्तक्षेप से ही प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है। प्रकृति के संतुलन के बिगड़ने की दशा को ही प्रदूषण कहा जाता है।[20] अमेरिकी राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी (1966) के अनुसार वायु, पानी, मिट्टी, पौधे, पेड़ और जानवर–सभी मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। ये सभी पारस्परिक संतुलन बनाये रखने के लिए एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिसे परिस्थिति विज्ञान संबंधी संतुलन कहते हैं। जब सीमा से अधिक विकास के लिए प्रकृति का उपयोग किया जाता है तो पर्यावरण में या वातावरण में कुछ

परिवर्तन होता है, उस परिवर्तन से ही असंतुलन पैदा होता है और इसी असंतुलन से प्रदूषण उत्पन्न होता है।[21]

जैन दर्शन में पर्यावरण संरक्षण के उपाय

भगवान् महावीर ने दसवैकालिक सूत्र में कहा–पृथ्वी, पानी, वायु और वनस्पति इन सबकी स्वतंत्र सत्ता है।[22] यह सच्चाई समझ में आने पर ही मनुष्य सबके प्रति अतिक्रमण और अत्याचार से बच सकता है। आज बहुत अतिक्रमण हो रहा है। मनुष्य चाहे जैसा इनके साथ व्यवहार करता है। क्या मनुष्य ने कभी ध्यान दिया कि आवश्यकता से अधिक वनस्पति नहीं काटना चाहिए? आवश्यक काम करने के लिए कुछ नीम पत्तियां तोड़नी है तो पूरी शाखा क्यों तोड़े? पानी से हाथ धोना है, एक गिलास पानी से काम चल सकता है, पर वहां कई लोटे पानी का अपव्यय क्यों? स्नान करने में एक बाल्टी पानी पर्याप्त है फिर भी नल को खोलकर घंटों तक अनावश्यक पानी क्यों बहा देते हैं? क्या यह अतिक्रमण नहीं है? ये प्रश्न जब मनुष्य के मस्तिष्क में उभरने लगेंगे तभी पर्यावरण की समस्या के समाधान की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण

जैन धर्म जीवन का अस्तित्व केवल, मनुष्यों, पशुओं या कीड़े–मकोड़ों में ही नहीं मानता, अपितु पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा तथा वनस्पति–इन पंचभूतों में भी उसका अस्तित्व स्वीकार करता है। आयारो में सूत्रकार कहते हैं कि जो पृथ्वीकायिक, जलकायिक, वायुकायिक तथा वनस्पतिकायिक जीवों का अस्तित्व अस्वीकार करता है, वह अपनी आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार करता है।[23] इसी प्रकार अग्निकायिक आदि जीवों के सन्दर्भ में भी जानना चाहिए। जैन आगम आयारो में पृथ्वीकायिक, अप्काय आदि पांच स्थावर जीवों के बारे में विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है।

महावीर ने कहा जो व्यक्ति नाना प्रकार के शस्त्रों से पृथ्वी, पानी, वायु तथा वनस्पति जीवों की हिंसा करता है वह न केवल पृथ्वीकायिक आदि जीवों की हिंसा करता है किन्तु नाना प्रकार के अन्य जीवों की भी हिंसा करता है। यह हिंसा मनुष्य के अहित के लिए होती है। "यह हिंसा अबोधि के लिए होती है। यह हिंसा ग्रन्थि है, मोह है, मृत्यु है, नरक है।"[24]

हिंसा संबंधी दुष्परिणामों को देखते हुए महावीर ने मुनि को हिंसा संबंधी कार्यों में व्यापृत न होने का निर्देश दिया। लेकिन एक गृहवासी हिंसा से सर्वथा उपरत हो जाए, यह संभव नहीं है, इसलिए उसके लिए एक सीमारेखा निर्धारित की। एक गृहस्थ आवश्यक हिंसा से नहीं बच सकता लेकिन अनर्थ हिंसा से अवश्य ही बच सकता है।

आज जो पर्यावरण का धीमा जहर मनुष्य को निगलने के लिए तैयार है, उसका कारण है–इस सीमा रेख का अतिक्रमण। क्योंकि संयम की सीमा में रहने वाला व्यक्ति अनपेक्षित भूमि की खुदाई नहीं कर सकता। सीमा का अतिक्रमण नहीं होने से ही पर्यावरण की समस्या समाप्त हो सकती है।

पर्यावरण की समस्या के समाधान के लिए जैनाचार्यों ने व्रतों का उनके अतिचारों का निर्माण किया है। जैनग्रन्थों में 'अनर्थदण्ड' एक शब्द आता है। भगवान् महावीर ने श्रावक के लिए पांच अणुव्रत, तीन अणुव्रत और चार शिक्षाव्रत का विधान किया, जिनमें एक गुणव्रत है–अनर्थदण्डव्रत–इसका तात्पर्य है कि अनावश्यक ऐसी चेष्टाएं करें, जिसमें देश और राष्ट्र की सम्पत्ति का नुकसान हो, अनावश्यक जल का अपव्यय और अनावश्यक भूमि का खनन करना, अनावश्यक वनस्पति का छेदन करना, अनावश्यक यात्रा करना, अनावश्यक बिजली का अपव्यय आदि अनर्थ क्रियाएं है, इनके प्रति सावधानी रखने से पर्यावरण की समस्याएं कम हो सकती है।

अनर्थदण्ड के पांच भेदों में एक भेद प्रमादचर्या भी है। निष्प्रयोजन पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं वनस्पति का छेदन करना प्रमादचर्या कहलता है।[25] इस व्रत के अनुपालन से दैनिक जीवन में पानी का अपव्यय कम होता है। जैनाचार्यों ने अनर्थदण्डविरति के पांच अतिचारों में अतिप्रसाधन एवं समीक्ष्याधिकरण का भी उल्लेख किया है। जितने पदार्थों से आवश्यकता की पूर्ति होती है उससे अधिक संग्रह करना अतिप्रसाधन कहलाता है तथा बिना प्रयोजन के ही किसी कार्य का अधिक आरम्भ करना असमीक्ष्याधिकरण कहलाता है। इस प्रकार जैन दर्शन में जल के असीमित प्रयोग एवं संग्रह का निषेध हजारों वर्ष पूर्व ही कर दिया था।

परिग्रहपरिमाण व्रत और पर्यावरण संरक्षण

इस व्रत को इच्छा परिमाण व्रत भी कहा जाता है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छाओं को सीमित करें। आवश्यकता से अधिक अन्न, जल, वैभव, धन के संग्रह से बचे। यह व्रत मनुष्य आदि की अनंत इच्छाओं को सीमित करता है इससे जहां एक ओर प्रकृति एवं पर्यावरण का हित होता है वहीं दूसरी ओर प्रकृति के सीमित संसाधनों का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग को समान रूप से प्राप्त हो सकता है।[26]

भोगोपभोगपरिमाण व्रत और पर्यावरण संरक्षण

भोगापभोगपरिमाण व्रत इच्छाओं और आवश्यकताओं को और अधिक संकुचित करता है। इस व्रत के पालन से दैनिक जीवन में भोग उपभोग की सामग्री का उपयोग क्रमशः घटते हुए न्यूनतम स्तर तक पहुंच जाता है। पानी

की अत्यधिक खपत वाले कूलर आदि का उपयोग कम से कम किया जाए तो बहुत मात्रा में पेय जल का संरक्षण किया जा सकता है। इसी प्रकार दैनिक जीवन में दुपहिया और चारपहिया वाहनों के बढ़ते उपयोग से कार्बन का उत्सर्जन बढ़ता जा रहा है और इससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या बढ़ती जा रही है। ग्लोबल वार्मिंग जल संकट का एक प्रमुख कारण है। प्रस्तुत व्रत के द्वारा दैनिक जीवन में वाहनों के प्रयोग को अत्यंत कम कर सकते हैं। परिग्रहपरिमाण व्रत एवं भोगोपभोगपरिमाण व्रत जैन दर्शन के महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो प्रकृति के संतुलन और संसाधनों के पुनर्चक्रण में अहम् भूमिका निभा सकते हैं। इस सन्दर्भ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का यह कथन उल्लेखनीय है कि यह पृथ्वी मनुष्य की जरूरतें पूरी करने में तो सक्षम है, किन्तु उसके लालच को पूरा नहीं कर सकती।

भगवान महावीर ने सीमाकरण का सूत्र दिया। उन्होंने कहा–सीमाकरण करो। उन्होंने गृहस्थ के लिए जो आचार संहिता दी, उसमें एक व्रत है–उपभोग का सीमाकरण। तात्कालीन समय में अनेक लोगों ने उपभोग का सीमाकरण किया। महावीर का एक श्रावक था गृहपति आनंद। वह बहुत बड़ा किसान था, बहुत संपत्ति थी। उसकी संपत्ति की तुलना आज के परिप्रेक्ष्य में की जाये तो उसे खरबपति कहा जा सकता है।

दिग्परिमाण व्रत और पर्यावरण संरक्षण

वनों की अन्धाधुन्ध कटाई भी ओजोन के लिए महाकाल के रूप में प्रकट हो रही है। पहले चारों ओर हरे भरे खेत दिखाई देते थे जो केवल पृथ्वी का ही सौन्दर्य नहीं था, जन–जीवन का भी सौन्दर्य है। इन हरे भरे वृक्षों पर चोट करने का अर्थ है ओजोन पट्टी पर प्रहार करना। दूसरी ओर कलकारखानों और बिजली घरों से निकली सल्फर डाईऑक्साइड, चिमनियों से निकलने वाला धुंआ, यान–वाहनों से निकलने वाली दूषित गैसे जो सारे पर्यावरण को दूषित बना रही है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रत्येक गैलन पेट्रोल के जलने से तीन पोंड कार्बन मोनोऑक्साइड, पंद्रह पोंड नाइट्रोजन मोनोऑक्साइड एवं अन्य विषैली गैंसे उत्पन्न होती हैं, जिससे 80 हजार से दो लाख फुट वायु प्रदूषित होती है। इस दूषित वायु से ओजोन में छिद्र हो रहे हैं जिससे सूर्य का ताप सीधा धरती पर आ रहा है। सूर्य के ताप का सीधा धरती पर आने का अर्थ है–छोटे–छोटे जीव जन्तुओं का अगली यात्रा के लिए प्रस्थान, त्वचा का झुलसना, कैंसर जैसे असाध्य रोगों का प्रादुर्भाव, निमोनिया, ब्रोंकाईटीस्ट तथा श्वास जैसे रोगों में वृद्धि। प्रकृति के विनाश का अर्थ है– सम्पूर्ण जन–जीवन

का विनाश। वस्तुतः यह चिन्ता का विषय है। इस पर गहराई से सोचने की आवश्यकता है। पर्यावरण विज्ञान की वास्तविकता को समझना जरूरी है, क्योंकि पदार्थ की सीमा है, उपभोक्ता ज्यादा है, अतः अनावश्यक इच्छा को न बढ़ाएं। संयम से प्रदूषण की समस्या को मिटाया जा सकता है। इस संदर्भ में अणुव्रत का घोष महत्त्वपूर्ण है–संयमः खलु जीवनम् – संयम ही जीवन है।

भगवान् महावीर ने श्रमणोपासक के लिए दिग्परिमाणव्रत का निर्देश दिया। जब व्यक्ति चारों दिशाओं में गमनागमन की सीमा करता है तब वह स्वतः अति आवागमन से बच जाता है। आज यह संकल्प विश्व की पर्यावरण सम्बन्धी समस्या का एक समाधान है। बढ़ते हुए प्रदूषण पर अंकुश है। इस व्रत का या अणुव्रत को स्वीकार करने का अर्थ है–संयम। इस व्रत से समय और शक्ति का बचाव होता है। वाहनों के उपयोग की सीमा होने से बढ़ते हुए प्रदूषण पर रोक लग सकती है।[27]

निष्कर्ष

जैन दर्शन आत्मवादी है। वह सब जीवों का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार करता है। उसके अहिंसा का सिद्धान्त अन्य जीवों को कष्ट व पीड़ा पहुंचाने से रोकता है। अहिंसा सूक्ष्म व पूर्ण पालन तभी सम्भव है जब व्यक्ति में त्योग व संयम की प्ररेणा जागती है और वह उस पथ पर अग्रसर होता है। इसी पथ की अनुपालना से ही पर्यावरण सुरक्षा सम्भव है। पर्यावरण प्रदूषण के कारणों का विश्लेषण यह बताया है कि योगवृत्ति सब समस्या का जड़ है और इस पर व्रत और त्याग से ही अंकुश लगाया जा सकता है। अतः यदि जैन दर्शन के व्रत व संयम को अपनाया जाए तो पर्यावरणीय समस्या का समाधान सम्भव है।

संदर्भ

1. पर्यावरण विमर्श, भारत की पहली द्विभाषी त्रैमासिक पत्रिका, ईयर 22, पृ. 14–15, अप्रैल–जून 2017
2. भारत की पहली द्विभाषी त्रैमासिक पर्यावरण पत्रिका, पर्यावरण विमर्श, पृ. 23–24, ईयर 21 जुलाई–सितम्बर 2016
3. पर्यावरण प्रशासन एवं मानव पारिस्थितिकी, पृ. 107
4: आयारो, 1–34, तं परिण्णाय मेहावी नेव सयं पुढवि–सत्थ समारंभेज्जा नेवण्णेहिं पुढवि–सत्थं समारंभावेज्जा, नेवण्णेहिं पुढवि सत्थं समारंभते समणु जाणेज्जा।
5. आयारो, सं. मुनि नथमल (आचार्य महाप्रज्ञ) 1974, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, 1/27
6 पर्यावरण विर्मश, पृ. 11, अप्रैल–जून 2017
7. पर्यावरण विमर्श, जनवरी–मार्च, 2017, पृ. 17।
9. जैनधर्म : जीवन और जगत्, साध्वी कनकश्री (1997) द्वितीय संस्करण, जैन विश्व भारती, लाडनूं, पृ. 26

10 पर्यावरण समस्या और समाधान, आचार्य महाप्रज्ञ (1996) जैन विश्व भारती, लाडनूं पृ. 5–6

11. पर्यावरण प्रशासन एवं मानव पारिस्थितिकी, पृ. 99 राकेश कुमार शर्मा, राजस्थान

12. उस्सिंचण–गालण–धोवणे य उवगरणमत्तभंडे य। बायरआउक्काए एयं तु समासओ सत्थं। आचारांग निुर्यक्ति, गाथा 213।

13. पर्यावरण डाइजेस्ट, अप्रैल, पृ. 18–20, समन्वय प्रकाशन, पत्रकार कालोनी, रतलाम सन् 1987 से प्रकाशित

14. पर्यावरण समस्या और समाधान, पृ. 6–7

15. पर्यावरण समस्या और समाधान, पृ. 5–6

16. संजमं सरणं गच्छामि, पृ.81–82, साध्वी विमल प्रज्ञा, आदर्श साहित्य संघ, चूरू

17. पर्यावरण समस्या और समाधान, पृ. 14

18. संजमं सरणं गच्छामि, पृ. 65

19. भारत की पहली द्विभाषी त्रैमासिक पर्यावरण पत्रिका, पर्यावरण विमर्श, अप्रैल–जून 2017, पृ. 10–11

20. पर्यावरण शिक्षण, पृ. 171, कमला वशिष्ट, यूनिवर्सल बुक हाऊस, जयपुर, 2007

21. पर्यावरण समस्या और समाधान, पृ. 3

22. दसवेआलियं, 4

23. आचारांगभाष्यम्, अध्ययन 1 का सूत्र– जे लोयं अब्भाइक्खइ,से अत्ताणं अब्भाइक्खइ। जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ,से लोयं अब्भाइक्खइ। 3/39

24. आचारांगभाष्यम्, अध्ययन 1 का सूत्र– एस खलु गंथे,एस खलु मोहे,एस खलु मारे, ,एस खलु णरए। 2/25

25. रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक, 35

26. समन्तभद्राचार्य, रत्नकरण्ड श्रावकाचार, श्लोक 36

27. संजमं शरणं गच्छामि, पृ. 71

****